

यूरोप में राष्ट्रवाद का विकास

१. विश्वव्यापी लोकतात्त्विक और भास्मालिक गठनों का विवरणः-

- यूरोप के पहले दिन में यूरोप और अमेरिका के लोगों को - सफी आयु वर्ग और भास्मालिक वर्गों के फूर्झों और बहिनाओं को - एक भवली जटिलता में विवरण की प्रतिमा की वर्द्धना करते हुए दिखाया गया है।
- उनके एक दृष्टि में मरात्ते हैं और दूसरे दृष्टि में पुरुष के अधिकारों का पता।
- चित्त के अवश्वास में धरती पर निरंकुश सर्वात्मों के प्रतीकों के हूंडे हुए अवश्वीष पड़े हैं।

सोरियु का कल्पनादर्शी दृष्टिकोणः

- विश्व के लोगों को अलग-अलग राष्ट्रों के कारण वर्गीकृत किया गया है, पिनकी पहचान उनके इनडों और राष्ट्रीय वैशभूषा के साथ्यम से होती है।
- एकत्रिता की प्रतिमा के लिए अग्रे जुखास का ग्रन्ति अनुकूल राष्ट्र अमेरिका और रिवटपरलैंड कर रहे थे, जो उस समय तक पहले से ही राष्ट्र - १८८२ बन चुके थे।
- अंतिकारी ट्रिसो से पहचाने वाले फांस अमी-अमी वहिमा के पास पहुंचा है।
- उसके बाद जर्मनी के लोगों लाल और मुग्ध छाड़ बेल्ट पर रहे हैं।

[2]

जर्मन लोगों के नाद आस्ट्रिया, यौ सिसिलियो
की प्रिंसिपाही, लोम्बार्डी, पैलेंड, इवेंड, आयरलैंड,
इंग्लैंड और अस्त्रेन के लोग हैं।

अपर शर्वर्म से, इस मस्ति, सां और फरिश्ते
इस दृश्य की देख रहे हैं।

विश्व के राष्ट्रों के बीच भावितोर का पूरीक
अरनेस्ट रेनर :

- अरनेस्ट रेनर के अनुसार समान भाषा, जर-ल, धर्म,
लोग होते को राष्ट्र कहते हैं।
- सब से राष्ट्र लगे प्रथाओं, लोगों और निष्ठा
का चरम लिन्द होता है।

राष्ट्रवाद :

- अपने राष्ट्र के जीति पुंज की भावना को राष्ट्रवाद
कहते हैं।

पूरोप में राष्ट्रवाद :

पूरोप में राष्ट्रवादी चेतना
को शुक्रात फाँसीसी कान्ति में
होता है।

फाँसीसी कान्ति :

- 1789 की फाँसीसी कान्ति राष्ट्रवाद की पहली झड़ू
आधिकारिक थी।
- इसने फाँसी में राष्ट्रका समाप्त कर अमरकृत
फाँसीसी जागरिकों को सोची।

फ्रांसीसी लोगों का विचार :-

- फ्रांसीसी लोगों मानव जाति के इतिहास में एक सदृश्यपूर्ण धरना थी।
- इसने मध्ययुगीन, राजकीयी निरंकुशता और भागिकी असमानता को समाप्त कर दिया।
- इसने पहली लाई संवंतता, समानता और बंधुत्व पर आधारित गणतंत्रवाद के विचार को प्रचलित किया, जिसने पूर्वी चीनी महाद्वीप के राजहानी-सत्राय में विश्व को अव्यावित किया।
- फ्रांसीसी लोगों में एक सामर्थिक पहचान की भावना बनाने के लिए उठाये गए कारण क्या हैं ?
- पितॄभाई और भागिक जीवे विचारों ने एक साधान के तहत समान अधिकारों का आनंद लेने वाले इकाउट समुदाय के राष्ट्र पर जोर दिया।
- एक नया फ्रांसीसी लोगों - तिरंगा - पुजा गया और जिसने पहले के राष्ट्रधर्म की जगह से ली।
- एकटे जनरल का पुनर्जन्म एक भागिकों के समूह द्वारा किया जाने लगा और इसका नाम लदलफर भौतिक असेलली ना दिया गया।
- राष्ट्र के नाम पर नई गुरियाँ रखी गई, शास्त्र लो गई और शहीदों को धार्य किया गया।
- एक के नीतिशास्त्र प्रवासनिक पूजा सभी लोगों की गई तथा अपने देश के एकी जागरिकों के लिए एक समान कानून बनाये गए।
- आंतरिक आयात - नियाति शुल्क समाप्त कर दिया गया और HR द्वारा माप की एक समान अवधि लागू की गई।
- कौच भाषा को राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया गया।

[4]

फ्रांसीसी कानून का उद्देश्य :-

- क्रान्तिकारियों जो धोखा की कि भूरोप के लोगों को निरकुशल से मुक्त करना फ्रांसीसी राज्य का उद्देश्य और नियती थी।

भूरोप के अन्य लोगों जो राष्ट्र बनाने में मद्दत करेगा

- प्रैकोलिन वस्त्र की भद्रता।
- फ्रांसीसी सेनाएँ 1790 के दशक में इंग्लैंड, हालें, बेल्जियम, रिट्टजर्लैंड और इटली के अधिकांश भाग में धूस गढ़।
- क्रान्तिकारी भुद्यों के बुक होने के साथ, दी पांसीसी सेनाएँ राष्ट्रवाद के विचार को लियों में बे जाने लगी।

नेपोलियन का शासन कानून

- नेपोलियन ने फ्रांस के पहले से लगू किये गये कई सुधारों को लगू करना शुरू किया,
- राजशाही की वापसी के बाद्यम से नेपोलियन ने निम्नस्तें फ्रांस में प्रजातन्त्र को बढ़ाव दिया था, लेकिन राष्ट्रासनिक क्षेत्र में उसके पुरी भवस्था की आवश्यकता रही और लुकाल बनाने के लिए जानिकारी सिद्धांतों की वासिता किया था।
- 1804 में उसने नेपोलियन भवित लगू की।

1804 की नेपोलियन संदिग्ध (नाशिक स्मृति) ।

1. खज्ज पर आधारित विशेषाधिकारी की समाप्ति ।
 2. कालुन के समय समाजता रुवं सम्पत्ति के अधिकार की सुरक्षा किया गया ।
 3. प्रशासनिक विभागों की सरल बनाया ।
 4. सामंती भवरशा को रुग्मत किया गया ।
 5. किसानों को मु-धास्त और खाड़ीरथारी शुल्कों से मुक्ति दिलाई ।
 6. राहरों में कारीगरों के श्रीणि मध्यों के नियन्त्रणों को हटा किया गया ।
परिवहन सर्व संवार चुनाली
 7. परिवहन रुवं संचार प्रणाली में खुलार किया गया ।
 8. मानकी कृत भार रुवं माप तथा सामान्य मुद्रा ।
- ∴ नेपोलियन स्मृति की बोध्या ॥

- वाट तु फॉर्म्यू (1804)
- राजनीतिक एवं तत्त्वों का अध्याव ।
 - कर के वृद्धि ।
 - सेंसेशनिय की लाभ करना ।
 - फ्रांसीसी सेनाओं में जबरन भर्ती करना ।
 - भूरोप में राष्ट्रवाद का निर्माण ॥
 - 18वीं शताब्दी के मध्य में भूरोप के अंदर राष्ट्र-राज्य जड़ी थी ।
 - सामुद्रिक पद्धति या समाज संरचने तहीं होने के कारण कोई भी राष्ट्र राज्य भूरोप में नहीं था ।
 - अलग - अलग क्षेत्रों में रहने वाले लोग अफसर अलग - अलग भाषाएँ भाषाएँ के बीच से थे । और विशिष्ट

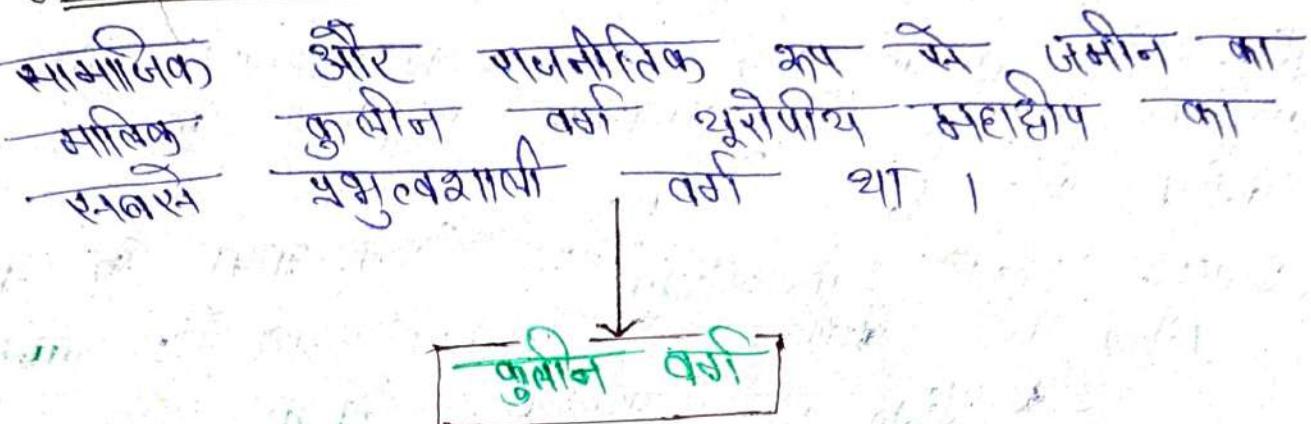
[6] दूसरे भास्त्राचय का उद्देश्य :-

- ओस्ट्रिया - हंगरी पर रास्तन करने पाला है अक्षकण भास्त्राचय को अल्पा - अल्पा द्वेतों और अन्य समूहों को जोड़कर लेना था।
- इसमें अल्पाइन के टिरांत, ओस्ट्रिया और स्कॉटलैंड जैसे इलाकों के भाष्य-साथ बोहेमिया भी शामिल था, जहाँ के कुलीन वर्ग मुख्य कथ से जर्मन भाषा लोक्ते थे।
- इसमें इतालवी भाषी पांत बोहेमिया और लैनिया भी शामिल थे।
- ✓ हंगरी की आदी आवादी ग्रेयार भाषा लोक्ती थी। जबकी आदी आवादी विष्वान लोक्ती का उपयोग करती थी।
- ग्राल्योस्त्राचय के कुलीन वर्ग ग्रीष्मकाल भाषा लोक्ते थे।
- इन तीन प्रमुख भूमुहों के अलावा, भास्त्राचय की स्थामाओं के भीतर अशीनरूप किरान एक्स्ट्राया ने एक भूमुह भी रहता था।

↓

ऐसा फैक्ट राजनीति स्कॉल की आसानी से लटका देने वाला नहीं था, इन तरह तरह के समूहों को ओपरेशन में लांचने वाला तर्क के पत्ते सभाउ के पाते लौटा था।
--

- :- कुलीन वर्गी और नया मध्यवर्ग :- [7]



राज्यों द्वारा जो जातियां और ब्राह्मणी द्वेषियों
के बीच थीं।

अपने जीवनाधिकारों में पुढ़ा हुआ था
और लोतपाल जीवनाधिकारों में श्रेष्ठ मात्रा का प्रयोग
करते थे।

जनसंघर्षों की दृष्टि से यह अमृत छोटा था।

मध्यवर्गी

औद्योगिक उत्पादन और सापर में वृद्धि से ब्राह्मणों का
विवास और वाणिज्य वर्गी का उदय हुआ। जिनका
अस्तित्व लाभार के लिए उत्पादन पर हिला था।

इससे जैसे सामाजिक समूद और अस्तित्व से आये
श्रमिक वर्गी और अस्तित्व वर्गी जो उद्योगपत्रियों
आपारियों और रेतों के लोगों से बने।

यह निश्चिह्न उदार मध्यम वर्गी ही था।

जहाँ कुलीन विशेषज्ञिकारों के उत्पादन
के बाद राष्ट्रीय रूपता के विचार सोकार्प्रिय
हुए।

[8] उदारवादी राष्ट्रवाद के क्या मायने हैं?

- + पुरोग में 19 वीं सदी के प्रारम्भ शताब्दी से राष्ट्रीय ज़्यकता से संबंधित उदारवाद से करीब जूँह चौंहा।
- + उदारवाद यानी Liberalism वाण्ड लैटिन भाषा के मूल Liben पर आधारित हैं जिसका अर्थ है:- आज्ञाद और Jism का अर्थ है:- विचार

- १ नये मद्दम वर्ग के लिए उदारवाद :-

- + फ्रांस की राष्ट्रकता और लाभुन के समस्त भाषी की राष्ट्रकता।
- + निरंकुश शासक और प्रादूरीवाद के विशेषाधिकारों की समाप्ति।
- + संसद के माध्यम से स्व संविधान और प्रतिनिधि सरकार का पक्षपात्र था।

उदारवाद

राजनीतिक

आर्थिक

- 19वीं सदी से सरकार पर खोर दिया जो सदमाहित हो जाना।
- फ्रांसीसी लोडो के बाद से उदारताद निरंकुशता और विशेषाधिकारों के अन्त के पक्ष में रहा है।
- संसद के माध्यम से स्व संविधान और प्रतिनिधि सरकार।

- उदारवाद लाजारो की भुक्ति और मात्र ज्यवं पुंजी की आवाजानी पर सर्व राज्य द्वारा लगातार वास्तव प्रतिवंश को समाप्त करने की एक में था।

• 1814 के लिए, 1833 में हैबर्ग में चूरेकली [9]
जा कर अपना माल बेचने वाले रुक्त आपारी
को ॥ सीमा शुल्क भाकों में गुजरना पड़ता
था और हर लार 5% जीमा शुल्क देना
पड़ता था।

• ~~इसी~~ रिश्वतीयों की वाणिज्यिक वर्गी द्वारा आर्थिक
सिनिमय और विकास में वाधा के काम में
देखा जाता था।

• 1834 में पश्चा की पहल पर शुल्क संघ खालवेराइन
का गठन किया गया और आधिकारियों जमीन
राष्ट्रीय इमारों व्यापार हो गए।

• संघ ने शुल्क अवरोदी की समाप्त कर दिया
और मुद्राओं की संख्या लेल से धटाकर
दी कर दी।

• रेपर्वे के नेटवर्क के निर्माण से वातिशीलता
को बढ़ावा दिया तथा राष्ट्रीय स्कॉलर्स के
लिए आर्थिक दितों का उपयोग किया गया।

• 1815 में उपरांत चूरीप में कोहिवाद

• 1815 में जैपीलियन की हार के उपरांत चूरीप की
भरकारी का बुकाव पुनः कोहिवाद की तरफ बह
राया।

• कोहिवादी का जाना था कि 1816 और समाज
की स्थापित पारंपरिक संस्थाओं जैसे - राजतं
चन्द, समाजिक पदक्रम, सम्पादन और परिवार
की संरक्षित किया जाना चाहिए।

[10]

इसके बिंदु ३ नेपोलियन के समय प्रिंस
पौली लड़ाव हुए थे उन सब को
जाने पर दिया गया जिसके लिए रुक्ष
भावशोता किया गया। जिसका नाम था
विद्या समझौता या विद्या साधि।

विद्या समझौता या विद्या साधि

१८१५ में प्रिंस, प्रशा, कस और आरेंट्र्या
जैसी युरोपीय शक्तियों (जिन्होंने मिलकर
नेपोलियन की दराया था) के प्रतिनिधि युरोप
के लिए एक समझौता तैयार करने
के लिए विद्या में इफ्रां इफ्रू हुए
जिसकी अध्यक्षता आरेंट्र्या के पास उठी
बैठरनियर की।

१८१५ की विद्या साधि का विवरण

- फ्रांस में बुर्जु राजवंश को पुनर्स्थापना।
- अधिक्षय में फ्रांसीसी विराटार को रोकने के
लिए फ्रांस की सीमाओं पर कई राज्यों
की रक्षापना की गई।
- फ्रांस ने उन इत्याकों पर से अधिक्षय थे
दिया जो उसने नेपोलियन के समय जीते
थे।
- प्रशा को उनकी पारिचमी सीमा पर महत्वपूर्ण
भूमि देते दिये गये।
- आरेंट्र्या को उत्तरी इटली पर नियंत्रण
प्राप्त हो गया।
- कस को पीलैंड भिल।

- नीतिलियन हारा एथापित ३७ जम्मन राज्यों का महासंघ लरकरा रखा गया।
- क्या काहिवादी लोग परिवर्तन के चिल्लाफ थे ?
- आधिकारा काहिवादी लोग कान्ति से पहले के दौर में बापसी नहीं चाहते थे।
- आधुनिकीकरण वास्तव में राजतन्त्र जैसी परंपरागत मूल्याओं की अपलब्धता कर सकता है।
- एक आधुनिक सेना, शूश्रा नीकरशाही, गोद्वाल अधिकारी वर्षा, आमन्तवाद और भूत्यास्त्र की समाप्ति घुरोप के निरक्षर राजतन्त्रों को छापेत प्रदान कर सकते हैं।

जया काहिवादी रासन बनाम समाज :

- १८१५ में एथापित काहिवादी रासन निर्मुक्त थे।
- वे आलेहना और असद्भाव की बरदाश्ट नहीं करते थे तथा निर्मुक्त सरकारों की वैधता पर पूर्णांचल सभाने वाली डाइविधियों पर उक्त भगाना चाहते थे।
- उनमें से आधिकारा भूमिकाओं ने संसारधर्म के नियम लाए जिनका उद्देश्य भमाचार पतों उत्तरका, नाटकों और गीतों में कही जाने वाली बोतों को नियंत्रित करना था। ऐसे सांसीसी कान्ति से पुड़ियां भवतन्त्र और मुक्ति के विचार इतने ही थे।

कान्ति कारी

- १८१५ के बाद के वर्षों के यमन के भय ने अर्जन उद्दरवादी - राष्ट्रवादीयों को भूमिगत कर दिया।

[12]

पूरोपीय राज्यों में कानूनिकारियों की प्रशिक्षित करने और उनके विचारों का प्रसार करने के प्रिय कठु गुप्त समाजन उम्मा अस्त।

कानूनिकारी होने का मतलब उन सच्च राजतंत्रों द्वारा थाओं का विरोध करने से था जो विचार कार्यस के बाद एथापित की गई थी।

इनमें से अधिकारी कानूनिकारियों ने राष्ट्र-राज्यों के निर्माण को भी एवं तंत्र सम्बन्ध ला रहे आवश्यक हिस्सा माना।

उपर्युक्ती मालिनी

इनका जन्म 1807 में जेनोआ में हुआ था।

वह कार्वोनियो में गुप्त समाजन के सदस्य बन गए।

योनीस साल की उन्नावरथा में लिबुरिया का कानून करने के लिए उन्हें 1831 में देश निकाला देया गया।

तत्काल उन्होंने यो और ज्ञानिगत साइनों की स्थापना का, पहला था मार्स्ट ने बंगा इटली और दुसरा बना संग यूरोप।

उक्त राजतंत्र राष्ट्र के काप में इटली के स्थापना पर विवास किया।

मालिनी का विवास था कि हिंदू जी मणि के अनुसार 1847 ही मनुष्य की प्रणतिक इकाई है।

मालिनी ने उसे - हवारी सामाजिक व्यवर-थाओं का सबसे खत्तेलाक दुष्कर्मन बताया।

- जैसे जैसे काहिनादी अवस्थाओं ने आगे ताकत की और भजबूत की कोरिया की शुरूप के अनेक स्थानों में उदारवाद और राष्ट्रवाद की लाइट से जोड़कर दिया जाने लगा।
- इन कानूनों का जीतव उदारवादी - राष्ट्रवादी के किया जो विकास मध्यवर्गीय विशिष्ट लोग थे।

राजकीय कानूनी आ भुजानी कानून

फांस में भुजाई कानून

- राजकीय कानूनी से भुजान आदीमन सामाजिक का विस्तार था।
- 1821 → भुजानीयों ने आदीमन रासन से राष्ट्रता के लिए संघर्ष बुक किया।
- कठियों और कलाकारों ने भुजान की धूरोपीय सम्भृता का प्रत्यक्ष बताकर प्रवासी की और इक्के गुरुस्त्रिम सामाजिक के विकास भुजान के संघर्ष के लिए जनगत जुटाया।
- कुम्हुजनुविया की संघी ने 1832 की राजकीय की एक रथवंड राष्ट्र के अप में 1 माहिती दी।

[14]

फ्रांस में बुद्धाई ग्रान्ट

- 1815 के लाद कोटवाडी प्रतिक्रिया के द्वारा जो शुभे राजा सत्ता में आपस आ गए थे, उन्हें अब उदारवादी कांतिकारियों ने बुद्धाई किया।
- उनकी प्राप्ति एक सर्वेषानिक राजतन्त्र रक्षाप्रिय किया गया जिसका अहमता लुई फिलिप था।
- बुद्धाई कान्ति से ब्रिटेन में भी विद्रोह भड़क गया जिसके पश्चात् फ्रेंच चूनाईट रिंगडम और यूथ नीयरलैंड से अलग हो गया।
- इसीलिये इन्होंने ब्रिटेनिय ने एक लाल कदा था की - जब फ्रांस हीकल है तो बाकी यूरोप की सदी - बुद्धाई हो जाता है।
- शुक्र फ्रिंचाई और जन विद्रोह :-

- ✓ 1830 की यूरोप में भारी आर्थिक फ्रिंचाई या वर्ष कदा खाता है।

↓
प्राप्ति

- | | | |
|----------|---|--|
| प्राप्ति | → | <ul style="list-style-type: none"> • फ्रेंच रिंगडम लनस्ट्रा राहिद • लोग गाँव से शहर की ओर कर दिए • ब्रिटेनियारी में राहिद • यादिनी की विभांग में राहिद और फ्रांस भराब होने के बारे शहर ओर गाँव में आपकू भरीनी के लिए गई। |
|----------|---|--|

- यानि यीने की कमी और आपक ब्रिटेनियारी से वर्ष 1848 में प्रेरित के लोग लड़कों पर उत्तर आए, जगह जगह अवरोध लगाये गए, और उन्हें लुई फिलिप को भगाने पर मजबूर किया गया।

• राष्ट्रीय सभा ने १९०१तक की ओजना कर थी [15]

१९०१तक के लाय कानून में आये नियम :-

- २० साल से अधिक उम्र के लोगों को वील डालने का अधिकार
- सभी जाति को काम के अधिकार की गारीबी दि गई।
- शेखगाह उपलब्ध कर्ता के लिए कारबोन उपलब्ध कराए गए।

इन सभी से धीरे-धीरे बरीबी और बोरोजगारी कम होने लगी।

1848: उदारवादीयों की सांगति :-

- 1848 में जब अंग्रेज भूरोपीय देशों में बरीबी, बोरोजगारी और भूखमरी से रेक्कान किसान - मजदूर विद्धी दाए रहे थे तब उसके समानान्तर पहुँचे - लिये मध्यवर्गों की एक सांगति भी हो रही थी।
- सांस के अन्य परवरी 1848 की धृणाओं के कारण राजा द्वारा पद लोगना तथा सार्वजनिक पुकार मानाधिकार पर आधारित राजनीति की धृष्णा की गई।
- भूरोप के अन्य भागों में जहाँ संवत्त राष्ट्र राज्य उष्मी आरेत्व में जहाँ थे - उसे :-
पर्मनी, इटली, फ्रान्स और अंग्रेज-शैरियन साम्राज्य वह के ३६०८वादी मध्यम वर्ग के पुकारों और अधिकारों के साथ भवेधानिकता की जोड़ देता है।

३०६१ ने लहरे जन - अंगोधीन का लाभ ३८५८
संसदीय सिद्धांते त्रिमु की व्यवस्था और
संघ बनाने की स्वतंत्रता पर आधारित
राष्ट्र - राष्ट्र के निम्निंग की अपनी
मार्ग की अगे बढ़ाया।

• जमीनी क्षेत्र में उदारवादियों की कानूनी -

इसके ४२४-२१ मध्यम वर्ष के पैरोलर
अवस्थायी और समृद्ध जातियाँ शे जो
क्रीकंपटि राष्ट्र में एक साथ आये थे।

• अब - जमीन राष्ट्रीय असेक्टर के लिए मतदान
करने के लिए;

• १८ अक्टूबर १८४८ की राजनीतिक समाजन के
४३ निर्वाचित सदस्यों ने क्रीकंपटि संसद
की बीठक सेंट पॉल के चर्च में आयोजित
किया।

• ३०६१ एक जमीन राष्ट्र के लिए संविधान
का भासीया तैयार किया जिसका नेहरूव राष्ट्रतंत्र
करेगा तथा वह संसद के अधीन होगा।

अब - जमीन राष्ट्रीय असेक्टर → संविधान के अधिन
राष्ट्रतंत्र

• जब प्रतिनिधियों ने पश्चा के राजा
विल्डम चुर्च की इन शर्तों पर राज
पदनी की प्रशंसकों की तो उसने इसे
अखीला कर दिया और ३०८५ ११ जानूर्य के
साथ निवाचित सभा का विशेष किया।

- संसद का सामाजिक आधार कमजोर ही गया था वयोंकि श्रमिकों, मजदुरों और महिलाओं की कोई आशेफाई नहीं दिया गया था।
 - संसद पर भव्यम् तर्फ़ पा पश्चुष्ट था, जो श्रमिकों और कारोबारी लोगों का विरोध करता था और एरिया मरतकप उनका समर्थन की दिया।
 - अंत में ऐना बुलाई गई और सभा को भर्ग कर दिया गया।
- राष्ट्रवाद के उद्य में महिलाओं का योगदान

- राजनीतिक संगठन का निर्माण
- समाचार पत्रों का प्रकाशन
- राजनीतिक बैठकों तथा प्रदर्शनों में हिस्सा लेना।

इसके लावजूद उद्य

- असेहली चुनाव के दौरान मतादाकार से विचित्र हुआ गया।
 - जब भी हाँ याँ चर्च में लैकफॉट संसद की सभा आयोजित हुई थी तो महिलाओं को केवल गेलरी में यह हीने के लिए पर्यावरक के बैप में झेला किया गया।
- कमानी काल्पना और राष्ट्रीय भावना :-

कमानीवाद

- • इसके विचारधारा जिसमें संस्कृति, कला और विचारों पर ध्यान की ज़ित कर राष्ट्रवादी भावनाओं का निर्माण किया जाता है।

- जिसने तकि तितकि और विज्ञान के अद्वितीय अवलोकन की आलोचना की और उनकी जगह भावनाओं अन्तर्दृष्टि और एकाध्यतादी आवज्ञाओं पर ले लिया,
- उनका प्रयास था कि इक साझा-समूहीकृत विरासत की अनुशृण्टि और इक संरक्षित अठीत को राष्ट्र का आधार घोष्या जाए।
- जमिन दारीनिक प्रौद्योगिकी ने लोक गीत, लोक कविता और लोक जूहों के माध्यम से आम लोगों के लिये जमिन संरक्षित की, जमीन की कोशिश की।

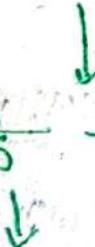
प्रौद्योगिकी गाँटफ्रीड



- सच्ची जमिनी संरक्षित उसके अम लोगों ने निर्दिष्ट थी-
- संस्कृत ही राष्ट्र की सच्ची आज्ञा है।
स्थानीय ज्ञान और राजनीय लोककथाओं की भूमिका

- आधुनिक राष्ट्रतादी संदेश को लें प्रमाण पर लोगों तक ले जाना था, जो अधिकार अर्थात् थे,

पोलोड़ का उदाहरण



- पोलोड़ का विमाजन अंगरेजी सदी के अंत में मध्यावित्यां - कस प्रश्ना और आविद्या के

लीच हो गया था।

- चंद्रपीठ पॉलेट अब एक स्वतंत्र क्षेत्र के काप में अस्तित्व के नहीं था, फिर भी भंगीर और माषा के माद्यम से राष्ट्रीय भावना को लीविट रखा गया।
- कम्पी कब्जे के बाद, पौष्टिक भाषा को रुक्खों से नाश कर दिया गया और कर्ती भाषा को इस खगड़ थोप दिया गया।
- 1831 में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भवास्ट विरोद्ध हुआ जिसे अन्तर्गत जुलूस दिया गया।
- इसके बाद, पॉलेट में पायरी की कई संस्थाओं ने भाषा को राष्ट्रीय प्रतिरोध के दियार के काप में इन्हें करना शुरू कर दिया।
- चंद्र की सज्जाओं और मध्मी धार्मिक विश्वास के लिए पौष्टिक भाषा का प्रयोग हुआ।
- पौष्टिक भाषा का प्रयोग कसी प्रभुत्व के विरुद्ध संघर्ष के प्रतीक के काप में देश जोड़ा।
- ^० जमीनी और इहमी का निर्माण :-

-^० जमीनी का निर्माण -^०

- 1848 में शुरूपियन सरकार ने बहुत कीशिश की कि व जमीनी का निर्माण कर दे परन्तु पह रेसा नहीं कर पाए।
- अपोंगि, राष्ट्र निर्माण की चट उद्यारवादी पहल राजशाही और फौज की ताकत ने मिलकर

धरा थी ।

- उसके बाद प्रश्ना ने यह भारत अपने अपने लोगों हुए कदमों के बर्मनी का स्वीकरण करके ही रखा ।
- उस अवधि प्रश्ना का पासंलर आदिता विभाजित था
- प्रश्ना ने एक राष्ट्रीय स्वीकरण के जांचेत्वन का निश्चल किया ।
- ये पर्ष के द्वारा आसन्देश, डैनमार्क और फ्रांस से तीन बुद्धि में प्रश्ना की जीत हुई और स्वीकरण की प्रक्रिया पूरी हुई ।
- 1871 में कंसर विभिन्न प्रथम को जरा सामाजिक को राजा घोषित किया गया ।
- बर्मनी के स्वीकरण ने यूरोप में प्रश्ना को माधारावित के रूप में रख्यापित किया ।
- जरा बर्मन राष्ट्र में मुझे, नैफिंग स्वतंभीयक छावर-याइंग के आधुनिकीकरण पर जीत दिया गया

इटली का स्वीकरण :-

इटली में राजनीतिक विषयों

- उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में इटली भारत राज्यों में विभाजित था जिनमें से केवल एक सार्डिनिया प्रिंसाप्ट एवं एक इतालवी राजधानी का शासन था

- उत्तरी इटली ऑस्ट्रियाई हैज़नवरी के अधीन था।
- गद्दी इलाही पर पौप ला शासन था।
- यहांपरी क्षेत्र रूपन के बुर्ज राखाड़ी के अधीन था।
- यहां तक कि इतालवी माना ने भी रुक स्थानान्ध रूप दरिल नहीं किया था और अभी भी इसमें कई क्षेत्रीय और स्थानीय विविधताएँ थीं।

इटली का रूकोकरण :-

- 1830 के दशक में जुस्पे गतिशील ने इटली के स्वतंत्रकरण के लिए जारीकरण प्रस्तुत किया।
- 1830 ईंवं 1848 के ग्रांतिकारी विद्वांश असफल हुए।
- 1859 में प्राचं और साईंनिया चटुर कृष्णनीतिक संघी की विरामके बाद्यमान से उसने ऑस्ट्रियाई वली को हरा दिया।
- 1871 में इतिनुस्ल फिलीय को रूकीकृत इटली का राजा घोषित किया गया।

काँडे कावृ 2

- साईंनिया - प्रिंगमांट का प्रमुख भासी था।
- इटली के प्रदेशों को रूकीकृत करने वाले ऑस्ट्रियन रुक नीतिवालों द्वारा किया गया था और जो ही उन्नततंत्र में

कांस के साथ की गई चावुर साधी के पीहे कावुर का हाथ था जिसके लागे आरंड़ा की दरधा वा अक्षर रुप इत्यली का एकीकरण सम्भव हो सका।

बुजौर्जे जौरीबाली

- १८ नियमित खेना का हिस्सा था। उसने इत्यली के एकीकरण के लिए सब्राह्मन एवं यस्ता का नेतृत्व किया था।
- १८६० में थे याकीन इत्यली और ये सिसलीयों के राष्ट्र में प्रवेश कर गए और स्पैनी वासियों को हटाने के लिए रथ्यानीय लिसानों का अभ्यन्तर पाने के सफल हुए।
- उसने शिक्षणी इत्यली के सिसली की राजा इमेनुरुल द्वितीय की सौप दी और इस प्रकार इत्यली का एकीकरण सम्भव हो सका।

विटेन ने राष्ट्रवाद :-

- ओधीगिक क्रांति के बाद विटेन की आर्थिक शक्ति बहुत बढ़ाया गया बहुत था।
- राष्ट्रवाद निसी उथल - पुल वा शान्ति का परिणाम नहीं आया एक ऐसी घटना परती वाली शक्तिया वा परिणाम था।
- १८८८ शताब्दी से इस विटेन एक राष्ट्र नहीं था।
- विटेन आमाज़न में अमेन, वेल्श, स्कॉट आ

आयरिश जैसे दूर सारे भाग था जिसे [23]
जूनातीय कहते थे।

विट्टन की अपील धरतान :-

- अंगत - राष्ट्र ने अपनी शक्ति में विस्तार के लाय - लाय और अन्य राष्ट्रों पर द्वीप अमृह पर विस्तार आरक्ष किया।
- 1688 में संद ने राष्ट्रत की शाकित्यों की विम्या।
- 1707 में इंग्लैंड और स्कॉटलैंड की निपाकर थुनाइट किंवड़म आंक चौट विट्टन का धरण किया गया।
- 1798 में हुए असफल विद्रोह के बाद 1801 में आयरलैंड की बलपूर्वक थुनाइट किंवड़म में शामिल कर लिया गया।
- नए विट्टन के प्रतीक चिह्नों को शुल बढ़ावा दिया गया।
- जया वितानी राष्ट्र का निर्माण किया जाया और एक ऐसी समुद्र घंटी संस्कृति का शुचार - प्रसार किया गया।

राष्ट्र की थृत्य - कल्पना :-

- अठाएवी एवं उनीष्वी शताष्वी में कल्पकारी जैसे बाष्ट की जुद थुं चिह्नित किया जैसे वह कोई शक्ति छो।

[24]

- राष्ट्रीय की जारी झोल के प्रतिरूप किया। भात था।
- इसके राष्ट्रीय के अन्वर्ति विचार की लोस कप देने का प्रयास किया।
- अदिला आकृति राष्ट्रीय का काम बन गयी।
- फँस में उसे लोकप्रिय हिसाई जान भारिआना दिया गया गिरफ्तार जन-राष्ट्र के विचार को रेखांकित किया। इसी विचार पर्मिनिया, जगन राष्ट्र का समक बन गई।

१०. राष्ट्रवाद और साम्राज्यवाद

साम्राज्यवाद :- जब कोई देश अपने देश की वाकित की वहात है, अभी यही अन्य माध्यन का प्रयोग करके उसे साम्राज्यवाद कहते हैं।

- राष्ट्रवादी समूद एक दूसरे के गति अभियान होते रहे तथा युद्ध के लिए संघर्ष तत्वर रहने लगे।
- बदले में प्रमुख द्विरोधीय वाकियों ने अपने साम्राज्यवादी उद्देश्यों को अपने लाने के लिए भ्रष्टप के परायीन लोगों की राष्ट्रवादी आकाशांशों का दृक्पथोग किया।

बाल्कन :-

- बाल्कन शौश्चिक रूप से जूजातिय क्षेत्र में विभिन्नताओं का क्षेत्र था जिसमें आधुनिक क्रमानिया, बुल्गरिया, अल्बीनिया, ग्रीस, मक्कानिया, फ्रैण्डलिया, रॉलोवानिया, सर्बिया आदि शामिल थे।
- इन क्षेत्रों के रहने वाले मूलनिवासियों की एत्याव कड़ा खाता था।
- 1871 के बाद बाल्कन क्षेत्र भूरोप में राष्ट्रियतादी तनाव का सबसे गंभीर रूपों बन गया।
- बाल्कन क्षेत्र का एक बड़ा द्विसांघ ऑटोगन माझाज्य के नियंत्रण में था।
- बाल्कन राज्य में क्रमाने एवं वाद के केंद्रों और ऑटोगन माझाज्य के विधान में विचार का प्रोटोट्रु दे गई। एक उसके अधीन अरोपीय राष्ट्रियताएँ उसके चांगुल से नियंत्रण कर सकती थीं। दोषणा करने की दृष्टिया।
- इसलिए बाल्कन के विभिन्न राष्ट्रिय ने अपने मुख्यों को लेकर समय से छोड़ दिया और अजादी को बापू पाने के प्रयासों के रूप में देखा।

कल्पिक राष्ट्रीयता :-

जैसे जैसे समाज राष्ट्रीय मानदों के अपनी पहचान और स्वतंत्रता को परिभाषित करने की जीविता।

- बालकन कीत जहो ठकराव का कीत बन जया।

बालकन राष्ट्रीय रूप - दूसरे से आरी इत्यि करते हो और प्रथम राष्ट्रीय चुनाव में ज्यादा इत्याका धर्मियाजा चाहत था।

- बालकन कीत में नड़ी शाकितयों के बीच भूतिस्पदा होने लगी।

काम, जमीनी, इंडिक, ऑस्ट्रो - एंगरी की दर तकन बालकन पर अन्य शाकितयों की पक्ष को जमजोर करके कीते में आने धमाव को बढ़ाना चाहती थी।

- इसके बारा इस कीत में कह चुद्ध दुरु और अंततः प्रथम विश्व चुद्ध हुआ।

भारतीयवाद विरोधी आदोपन :-

धूरोणीय शाकितयों के से औपनिवेशीकरण किया था 19वीं शती के अन्त में राष्ट्रवादी लोक उत्तरांश परिव्रद्ध करने लगे।

- दर तरफ से भारतीय विरोधी आदोपन विजाप्ति हुए। ते सभी सालं राष्ट्र-राज्य

बानोने के लिए अंदर कर रहे थे। [27]

- २५ सभी कल मानविक राष्ट्रीय शक्ति
की भावना से अरिह थे जो साक्षात्कारवाद
विशेष की प्रतिया से उभरी।
- अहं विचार कि समाज की विषय, वाज्यी
से संबंधित किया जाना चाहिए इत्यामारिक
और सार्वज्ञानिक कप से एतीका की पा
जाने आ।